‘अंधेरे में’ लंबी कविता और उसके अनुवादों का परिचय

डॉ. अन्नपूर्णा सी.

प्रोफेसर,हिंदी विभाग,
मानविकी संकाय ,
हैदराबाद केन्द्रीय
विश्व विद्यालय
हैदराबाद-500046
(तेलंगाना)
Email :-
annacherla@yahoo.com
Mo. 09422903108

प्रस्तावना

हिंदी कविता काल के अनुसार अपना तेवर बदलती रही है। अब सवाल यह भी उठता है कि इस बदलते तेवर की प्रारंभिक अवस्था में पीछे की और आगे की प्रवृत्तियाँ दिखाई देती हैं? ऐसे ही बदलते तेवर के अंतर्गत आज मैं गजानन माधव मुक्तिबोध की कविता के बारे में चर्चा करते हुए, उसके अन्य भाषाओं में कैसे अनुवाद के द्वारा पहुंचाए गए, इसका संक्षिप्त परिचय देना चाहती हूँ। वर्तमान साल 2017 मुक्तिबोध का जन्म शती साल है। उनकी रचनाओं का पुर्नपाठ हो रहा है। पुन: उनकी रचनाओं के बारे में याद करना साहित्यकारों की जिम्मेदारी है, क्योंकि उनकी कविता के तेवर आज भी उतने ही प्रासंगिक है।

‘अंधेरे में’ मुक्तिबोध की लंबी कविता है। यह कालजयी कृति है। लंबी कविता में अंतर द्वंद्व या कवि के मानस का अंत:संघर्ष भाव प्रवणता के साथ प्रतिबिंबित होता है। कवि का यह अंत:संघर्ष व्यष्टिपरक और समष्टिपरक दोनों रूपों में संभव है। इस अंत: संघर्ष में द्वन्द्वात्मकता उस के सुख-दुख, प्रकाश-अंधकार, आशा-निराशा ,राग –द्वेष आदि पक्षों को दोनों रूपों में निरूपण करने का प्रयास होता है। कवि इस अंतर द्वंद्वात्मक मन:स्थिति का चित्रण करने के लिए प्रतीकात्मकता को प्रयोग करता है। इस प्रकार प्रयोग की गई लंबी कविता है ‘अंधेरे में’। कहा जाता है कि कवि अपनी इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए फैन्टेसी का सफल प्रयोग करता है। फैन्टसी मूर्त से आमूर्त की ओर अग्रसर होने की प्रक्रिया है। । माने चेतन और अवचेतन मन में घटित होनेवाली घटनाओं से संबंधित है।

काव्य में यह फैटंसी एक टेकनीक के रूप में प्रयुक्त की जाती है। यह लंबी कविताओं में प्रयोग की जाती है। नई कविता में इस का श्रेय मुक्तिबोध को दिया जाता है। मुक्तिबोध ने ‘अंधेरे में’ लंबी कविता को प्रतीकात्मक रूप में चित्रण किया। शीर्षक द्वारा ही पाठक के मन में यह उत्सुकता पैदा की जाती है कि यह कौन सा अंधेरा है? क्या कवि अधर्म, अज्ञान, पिछड़ेपन या असत्य से झूझने वाले मन के संकेत रूप में अंधेरे को इस्तेमाल कर रहा है?

छायावादी युग की प्रवृत्तियाँ, जैसे- आत्माभिव्यक्ति- मैं शैली ,सौंदर्य भावना (प्रकृति और नारी) प्रकृति प्रेम, रहस्य भावना ,राष्ट्रीय भावना (मानवतावाद), करूणा, नवीन अभिव्यंजन आदि... इस युग की कविता में कथ्य या कथा वस्तुकी प्रधानता नहीं है। इस प्रकार के तत्वों की कविता में 1936 सें परिवर्तन आने लगा । कवि की कल्पनामय जगत से यथार्थ की ओर ध्यान आकृष्ट करने लगे। यही से प्रगतिशील और प्रगतिवाद की प्रारंभिक दशा शुरू होती है। हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में मार्क्सवादी सिद्धांत से प्रेरित होकर काव्य की रचना करने लगे। हिंदी में प्रगतिवाद के रूप में तेलुगु में अभ्युदय कविता के रूप में विकास होने लगे। (इस के अंतर्गत कवि पंत दिनकर, बालकृष्ण शर्मा नवीन , नागार्जुन आदि आते हैं । तेलुगु में श्री श्री ,दाशरथी ,नारायणरेड्डी ,कालोजी, नारायणराव आदि आते हैं।)

मुक्तिबोध की रचनाएँ नई कविता के अंतर्गत मानी जाती है। 'अंधेरे में' प्रगतिवाद और प्रयोगवाद की प्रवृत्तियों के साथ अपने विशिष्ट तेवर के साथ प्रस्तुत है। इस प्रपत्र में मैं इस कविता और उसके मराठी भाषा में हुए अनुवाद और नाट्य मंचन के बारे में अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद की दृष्टि से चर्चा करना चाहती हूँ।

मुक्तिबोध की काव्य भाषा और प्रतीक प्रयोग

मुक्तिबोध एक सशक्त यथार्थवादी कवि रहे हैं। काव्य भाषा को सुदृढ़ और विचाराभिव्यक्ति में सक्षम होना आवश्यक है, क्योंकि भाषाभिव्यक्ति का पक्ष ही कविता और कविता के माध्यम से कवि को महान बनाने में सहायक होती है। मुक्तिबोध की काव्य भाषा में विभिन्न शब्दावलियों का मिश्रण देखने को मिलता है। तत्सम, तद्भव, अरबी, फारसी, अंग्रेज़ी सभी भाषाओं के शब्दों का प्रयोग उन्होंने किया है। उनकी कविता में युग की नई चेतना नए रूप में और नई काव्य भाषा में अभिव्यक्त हुई है जो विद्रोह से भरपूर है। और यह विद्रोह उनके द्वारा प्रयुक्त प्रतीकों के माध्यम से चिंगारियों की तरह उठता है। प्रतीकों का प्रयोग काव्य प्रक्रिया का एक अंग है, कवि की विचारधारा को आगे बढ़ाने में प्रतीकों का प्रयोग महत्वपूर्ण होता है। मुक्तिबोध के प्रतीक भी एक निश्चित विचारधारा (जो कि मार्क्सवादी है) को अभिव्यंजित करने का लक्ष्य लेकर चलते हुए दिखाई देते हैं। 'अंधेरे में' स्वप्न के भीतर चलता स्वप्न है। यह एक चित्र शृंखला है, जिसमें स्वप्न टूटते है, लेकिन शृंखला खंडित नहीं होती। शमशेर की टिप्पणी महत्त्वपूर्ण है कि यह कविता स्वतंत्रतापूर्व और स्वतंत्रता पश्चात का दहकता इस्पाती दस्तावेज है। जगदीश गुप्त मुक्तिबोध की कविताओं के बारे में लिखते हैं, "मैं उनकी कविताओं को पढ़कर इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि उन्होंने अपनी अभिव्यक्ति के अनुरूप रूपकों, प्रतीकों, बिम्बों की परिकल्पना करते हुए सशक्त भाषा गढ़ी है। अत: जितने अंशों में उनकी अभिव्यक्ति सफल हुई है उतने अंशों में वे अपनी मान्यता के अनुरूप महान कहलाने के हकदार हैं।(गगां प्रसाद विमल; मुक्तिबोध का रचना संसार; सुषमा पुस्तकालय,दिल्ली; 1986, पृ. 71)

'अंधेरे में' कविता और अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद

'अंधेरे में' का अनुवाद तेलुगु, कन्नड, बांग्ला, उर्दू, ओड़िया, मणिपुरी आदि लगभग बारह भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया गया है। इसका मराठी अनुवाद मेघा आचार्य ने 'काळोखात' शीर्षक से किया है। अंग्रेजी में भी 'इन द डार्क' शीर्षक से कृष्ण बलदेव वैद ने अनुवाद किया है। अनुवाद क्षेत्र के अधुनातन विस्तार को अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद के रूप में देखा जाता है। यह संदर्भ स्रोत और लक्ष्य पाठों को संकेतों और प्रतीकों के व्यवस्था के रूप में देखता है। 'काळोखात' का नाट्य रूपांतरण भी रंगमंच पर प्रस्तुत किया गया है। यह तो सीधे रूप में अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद है, जिसमें स्रोत पाठ भाषिक तो लक्ष्य पाठ भाषेतर व्यवस्था है। अत: यहाँ काव्य से उभरते हुए संकेत और उसके अनुवाद मराठी, अंग्रेजी अनुवाद और उसके रंगमंचीय प्रस्तुति पर अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद की दृष्टि से चर्चा की जाएगी।

'अंधेरे में' भाषा से भाषा में सृजनांतरण

काव्यानुवाद जटिल कार्य है। मूलकृति की विषयवस्तु में चित्रित संवेदनाओं को पकड सकते हैं, लेकिन उस की कलात्मक अनुभूति तक पहुँचना कठिन है। काव्यानुवाद करते समय अनुवादकों को दोनों भाषाओं का सम्यक ज्ञान ही नहीं, बल्कि अनुवादक को कवित्व शक्ति और सर्जनात्मक प्रतिभा की भी आवश्यकता होती है। काव्य का अनुवादक भी मूल रचनाकर की भांति सृजन की प्रक्रिया से गुजरता है। अत: यह अर्थ भर का अंतरण नहीं है। यह एक भाषा में किए गए सृजन का दूसरी भाषा में सृजनांतरण ही कहा जा सकता है। 'अंधेरे में' लंबी कविता प्रतीकात्मक कविता है। इन प्रतीकों के सहारे कवि ने अपनी भावनाओं को जीवंत रूप में चित्रण किया। शब्द चित्र निर्माण करते हैं । ऐसे ही चित्र अनुवाद को भी अनुवाद में निर्माण करने होते हैं।

मूल :

अंधेरे में हिंदी कविता में से (मूल)
इतने में अकस्मात गिरते हैं भीतर से
फूले हुए पलस्तर,
खिरती है चूने-भरी रेत
खिसकती हैं **पपड़ियाँ** इस तरह--
ख़ुद-ब-ख़ुद
कोई बड़ा चेहरा बन जाता है,
स्वयमपि
मुख बन जाता है दिवाल पर,
नुकीली नाक और
भव्य ललाट है,
दृढ़ हनु
कोई अनजानी अन-पहचानी आकृति।
कौन वह दिखाई जो देता, पर
नहीं जाना जाता है !!
कौन मनु ?

मराठी अनुवाद -

एवढ्यात भिंतीवरुन अकस्मात्
पडत जातात फुगलेल्या प्लास्टरचे पापुद्रे
झरते चुनाळ रेती
झरत जातात **खिपल्या** अश्या काही-
आपोआपच
भला मोठा चेहरा कुणाचा
आकारला जातो भिंतीवर,
टोकदार नाक
भव्य कपाळ
आणि जबर हनु;
एक अजाणती अनोळखी आकृति.
कोण तो?
ऐकू येतो पण ओळख मात्र पटत नाही!!
कोण मनु?

'पपड़ियाँ' के लिए अनुवादक जब **'खिपल्या'** शब्द का प्रयोग करता है तब मूल पाठ में पाठक के मानसपटल पर उभरने वाला चित्र उतने ही प्रभावोत्पादकता के साथ लक्ष्य पाठ के पाठकों के मन में उभरता है। यहाँ अनुवादक ने अपनी सृजनात्मता का परिचय दिया है।

मूल कृति में जब पात्र उस आकृति को पहचानने की कोशिश करता है और कहता है- कौन मनु? यहाँ विराम चिन्हों के अभाव में द्वियार्थकता की समस्या उत्पन्न हुई है। कौन? मनु?(यह मनु है क्या?) या कौन मनु?(यह मनु कौन है?) यहा पहला अर्थ अभिप्रेत है।

मराठी में इस अर्थ को संदर्भ अनुसार पकड़ लिया गया है, लेकिन अंग्रेजी में इसका अनुवाद who is this Manu? अर्थात यह मनु कौन है? किया गया है जो कि गलत है।

अंग्रेजी अनुवाद :

And then suddenly
Blisters if paint
………
…
Who is this Manu?

शब्द अपने आप में एक चित्र है। उसका अर्थ और एक चित्र बनाता है। उससे जुड़े संदर्भों में यह चित्र और भी स्पष्ट हो जाता है। मूल कविता में निस्तब्ध शब्द से जो भयानक दृश्य प्रतिबिंबित होता है, मराठी अनुवाद में 'प्रशांत' शब्द उसके साथ न्याय नहीं कर पाया है।

मूल

बाहर शहर के, पहाड़ी के उस पार, तालाब...
अँधेरा सब ओर,
निस्तब्ध जल,

मराठी अनुवाद

नगराच्या बाहेर, पर्वतपालीकडे, तलाव...
चहुकडे पसरलेला काळोख,
प्रशांत जल

'अंधेरे में' और 'काळोखात' : भाषा से भाषेतर संकेतों में रूपांतरण (रंगमंच)

काव्य का अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद भाषिक तथा भाषिकेतर व्यवस्था के बीच घटनेवाली एक रूपांतरण की प्रक्रिया है। और इस दृष्टि से देखें तो काव्य का अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद करते समय उस कविता में निहित अन्य तत्व गौण हो जाते हैं और केवल भाव पक्ष ही केंद्रीय रहता है, जिसमें काव्य में निहित प्रतीकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रहती है। परंतु इस का अर्थ यह नहीं है कि अनुवादक की समस्या समाप्त हो जाती है। यहाँ अनुवादक की जिम्मेदारी और बढ़ जाती है। क्योंकि प्रतीकात्मक अनुवाद में अनुवादक को भाषिक कथ्य को भाषेतर व्यवस्था के माध्यम से व्यक्त करना होता है, जिसकी अपनी अलग सीमाएँ और समस्याएँ है।

'अंधेरे में' और उसके मराठी अनुवाद 'काळोखात' दोनों का डॉ. सतीश पावड़े के निर्देशन में नाट्य मंचन भी हुआ है। इस तरह की फैन्टेसी का नाट्य रूपातंरण निदेशक के लिए जितना रोमांचक रहा होगा उतना ही चुनौतीभरा काम भी रहा होगा।
एकल अभिनय की मर्यादाओं को देखते हुए निर्देशक ने कविता मेन व्याप्त दृश्य रूपों को अलग-अलग टुकड़ों में बाटा। इस तरह

उन्हें आठ दृश्य मिले, जिसे संवादात्मक नाटक में परिवर्तित किया है। निर्देशक के शब्दों में कहे तो, "'अंधेरे में' असल में प्रकाश और अंधेरे का युद्ध है। ये दोनों इस नाटक के चरित्र है। सामान्य भाषा में प्रकाश नायक है तो अंधेरा खलनायक है। यह दो स्थितियाँ हैं जिसका खेल प्रकाश विन्यास के माध्यम से दिखाना था।"

नाटक की भी अपनी भाषा होती है। यह भाषा बनती है पात्रों से, पात्रों के संवाद से, संवाद की अभिव्यक्ति शैली से और संवादों के साथ अभिव्यक्ति शैली के अनुरूप ध्वनि व्यवस्था और प्रकाश व्यवस्था से। नाटक में कविता का शीर्षक ही एक तरह से संकेत के रूप में प्रयोग किया गया है, जिसे मंच पर प्रकाश को बंद करके और केवल पात्र पर ही आवश्यक उतना प्रकाश डाल कर उभरा गया। कविता में बहुत सारी ऐसी घटनाएँ है जो पाठक के मानस पटल पर फिल्म या नाटक की तरह जीवंत हो उठती है। उदाहरण के लिए-

मराठी अनुवाद

अरे...! अरे.... !!
तलावाच्या सभोवताल,
अंधारात जंगल-झाड़
चमचमतात हिरवट हिरवट ,
अचानक
वृक्षांच्या माथ्यावर कडाडतात वीजा
फांद्या डोलत हेलाकावत किंचाळत,
आपटतात एकमेकांवर डोकी
एवढ्यात अकस्मात
झाडा-झुडपांच्या काळोखात लपलेल्या एका
जादुई विवरेचे शिला-द्वार
उघडते धाड्कन
....
घुसत जाते लाल-लाल मशाल विचित्रशी,
विवरेच्या केंद्र काळोखात
लाल-लाल धुकं ;
धुक्यात, समोर, रक्तालोक स्नात-पुरुष एक,
रहस्य साक्षात्!!

- **मूल**

अरे ! अरे !!
तालाब के आस-पास अँधेरे में वन-वृक्ष
चमक-चमक उठते हैं हरे-हरे अचानक
वृक्षों के शीशे पर नाच-नाच उठती हैं बिजलियाँ,
शाखाएँ, डालियाँ झूमकर झपटकर
चीख़, एक दूसरे पर पटकती हैं सिर कि अकस्मात्--
वृक्षों के अँधेरे में छिपी हुई किसी एक
तिलस्मी खोह का शिला-द्वार
खुलता है धड़ से
....

घुसती है लाल-लाल मशाल अजीब-सी
अन्तराल-विवर के तम में
लाल-लाल कुहरा,
कुहरे में, सामने, रक्तालोक-स्नात पुरुष एक,
रहस्य साक्षात् !!

इस संपूर्ण प्राकृतिक घटना में प्रकाश योजना और ध्वनि योजना की महत्वपूर्ण भूमिका हो जाती है, जिससे कविता में निहित भाव को यथावत उत्पन्न किया गया है। तूफान की आवाज और प्रकाश को लपलपाने से यह भयंकर वातावरण का यह संकेत नाटक में उभरा गया। इस संदर्भ में निर्देशक कहते हैं,

"मूलतः मैं मुक्तिबोध की कविता को पंचतत्वों की अंतर्गत अभिव्यक्ति ही मानता हूँ। वायु, जल, अग्नि, पृथ्वी, आकाश यह केवल तत्व ही नहीं तो सर्जक ध्वनियाँ भी है। यह सारी ध्वनियाँ को 'संज्ञा' के कोष से जोड़ना जरूरी था। स्थितिनुरूप 'सिंफनी' का प्रयोग भी ठहराव को अर्थ देता रहा। मंच विन्यास के रूप में एक काली गुफा, ब्लैक होल अथवा मकड़े के जालों में उलझी जिदंगी यह मेरी परिकल्पना थी। जो संपूर्ण काले परदे और रेडियम से बने जालों के माध्यम से प्रभावी रूप से दृष्टिगोचर हुई।"

अनुवाद में कुछ छोडना और और कुछ नया जोड़ना एक सामान्य बात है। निर्देशक ने यह छुट लेते हुए इसमें कुछ संदर्भों को बुद्ध से भी जोड़ा है। साथ ही और भी कुछ छोटे छोटे बदलाव किए हैं। परंतु यह बदलाव मूल कविता के साथ न्याय ही करते हैं। कविता के पाठक जब दर्शक रूप में होते है, यह बदलाव उन्हें आनंदयुक्त चकित कर देता है।

निष्कर्ष

अंधेरे में में छिपे अंत:स्वर को पहचाना अनुवादक की पहली आवश्यकता है। अनुवाद की दृष्टि से देखें तो मुक्तिबोध की 'अंधेरे में' वास्तव में एक चित्र शृंखला है। उसमें मनोदशाओं आए द्रुतपरिवर्तन है। यह कविता आशंकाओं और जनाकांक्षाओं, स्वप्नों और संभावनाओं से बुनी गई एक विराट स्वप्न फैंटेसी है। 'अंधेरे में' को मात्र कवि की खोई हुई परम अभिव्यक्ति की खोज आख्यान नहीं है; यह तो व्यक्ति और एक पूरे समाज की खोई हुई परम अभिव्यक्ति, जो वस्तुतः एक-दूसरे से अभिन्न है और एक के बिना दूसरे को पाया ही नहीं जा सकता, को पाने और उसके रास्ते में आने वाले व्यवधानों और संघर्षों का महा-आख्यान भी है। और इसके अनुवादक एवं नाट्य रूपांतरणकार को यह अनुभव होने के बाद ही वह पुन:सृजन करने में समर्थ हो पाया है। अनुवाद में छोटी बड़ी कमियों के बावजूद भी मूल की संवेदना को दूसरे भाषाभाषी पाठकों तक पहुँचाने में दोनों अनुवाद सफल हुए हैं। निर्देशक ने भी मूल कविता और उसके मराठी अनुवाद को मंच पर सफलतापूर्वक खड़ा कर दर्शकों को अभिभूत कर दिया। मुक्तिबोध की यह अभिव्यक्ति आत्माभिमुख होते हुए भी समाजोन्मुख है। 'अंधेरे में' की कालजयिता के परिणामस्वरूप इसके पुनःसृजन की प्रक्रिया हमेशा चलती रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ

1. काळोखात (मराठी अनुवाद)अनु. मेघा आचार्य, ट्रांसफ्रेम क्रिएशन, वर्धा, 2014
2. In The Dark (Eng अनुवाद) कृष्ण बलदेव वैद्य , Rain bow Publishing, Delhi, 2001
3. हिंदी साहित्य कोश - भाग 2
4. हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली - डॉ. अमरनाथ, राजकमल, दिल्ली
5. हिंदी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ - डॉ. शिवकुमार शर्मा, आशोक प्रकाशन, दिल्ली